मुहब्बते रसूल सल्ल.
या
शिर्किया अकाइद

29

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं। हम उसी का शुक्र अदा करते हैं और उसी से मदद और माफ़ी चाहते हैं। अल्लाह की ला तादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रज़ि पर।

व बअद!

इर्शादेबारी तआला है "आसमानों और ज़मीन की पैदाइश, रात–दिन का हेर–फेर, कश्तियों–जहाजों का लोगो को नफा देने वाली चीजों को लिये हुए समन्दरों में चलना, आसमान से पानी बरसा कर मुर्दा (बंजर) ज़मीन को ज़िन्दा कर देना, उस में हर तरह के जानवरों को फैला देना, हवाओं की दिशा (रुख) बदलना और बादल जो आसमान और ज़मीन के बीच घिरे रहते हैं उनमें अक्लमन्दों के लिये निशानियां हैं।"(बकरा–आयत–164) मतलब यह कि कायनात का सारा निज़ाम अकेले अल्लाह के इख्तियार में है और "ईमान वाले सब से ज्यादा मुहब्बत अल्लाह से करते हैं।" (बकरा–आयत–165) और मुहब्बत उसी से होती है या की जाती है जो हमदर्द हो, मुश्किलात में काम आए, नफा दे और नुक्सानात से बचाए। मोमिन हर वह चीज़ पसन्द करता है जो अल्लाह चाहता है। हर उस चीज़ से मुहब्बत करके जो अल्लाह को पसन्द हो अल्लाह की नज़दीकी पाता है। इसीलिए अल्लाह के आखिरी नबी व रसूल मुहम्मद सल्ल. से सच्ची मुहब्बत रखता है। फ़रमाने रसूल सल्ल. है– (1) "उस जात की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है तुम में से कोई शख्स उस वक्त तक मोमिन (ईमान वाला) नही हो सकता जब तक में उसके नज़दीक उसके वालिद या औलाद से ज्यादा प्यारा न हो जाऊं।"(बुखारी–14–अबुहुरैरा रज़ि)

(2) अनस रज़ि. से मर वी हदीस में है कि " कोई शख्स उस वक्त तक मोमिन नही हो सकता। जब तक में उसके लिए उसके घर वालों, माल और सब लोगों से ज्यादा प्यारा न हो जाऊं।" (बुखारी–15, मुस्लिम–55 (अनस रज़ि.)

(3) अनस रज़ि. का बयान है कि एक शख्स आप सल्ल. की खिदमत में हाजिर हुआ और पूछा कि कयामत कब आएगी? तो आप सल्ल. ने फरमाया " तुमने कयामत के लिये क्या तैयारी कर रखी है?" उसने कहा– अल्लाह की और उसके रसूल सल्ल. की मुहब्बत। आप सल्ल. ने फरमाया "बेशक! तुम उसके साथ हो जिससे तुमने मुहब्बत की।" अनस रज़ि. कहते हैं कि हमें इस्लाम लाने के बाद किसी बात से इतनी ज्यादा खुशी नही हुई जितनी आप सल्ल. का जवाब सुन कर हुई। (बुखारी–3688, मुस्लिम–2639)

मुहब्बते रसूल सल्ल. का तकाज़ा

आप सल्ल. से मुहब्बत करने का तकाज़ा है कि आप सल्ल. के हुक्मों को माना जाए। जिन बातों (कामों) का आप सल्ल. ने हुक्म दिया है उन्हें किया जाए और जिन बातों से आप सल्ल. ने मना किया है उनसे बचा जाए। इसलिए कि "आप सल्ल. ख्वाहिशे नफ्स (अपनी मर्जी) से कोई बात नही कहते यह तो अल्लाह का हुक्म है जो आप की तरफ वह्य किया जाता है।"(नज्म–आयत–3–4) आप सल्ल. से मुहब्बत करना और आपका कहा मानना आपके तरीके पर चलना ईमान की शर्त है। इर्शादे बारी तआला है "अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरी पैरवी करो। अल्लाह भी तुम से मुहब्बत करेगा।" (आले इमरान–आयत–31)

अल्लाह के रसूल सल्ल. से सच्ची मुहब्बत का यह भी हक है कि हम उन पर अपनी प्यारी चीजों को कुर्बान करके दिल में सुकून और खुशी महसूस करें और दूसरी सभी चीजों की मुहब्बत को अल्लाह और उसके रसूल सल्ल. के ताबेअ (बाद) रखें।

मुहब्बते रसूल सल्ल. के इज़हार में गुलु से बचें

कई लोग आप सल्ल. की मुहब्बत का एहसास कराने के लिए आप की खूबियाँ बयान करने में गुलू से काम लेते हैं और आप सल्ल. की शान में वो बातें बयान कर जाते हैं जो सिर्फ अल्लाह की शान में बयान की जानी चाहिये। इस तरह जाने–अनजाने में अल्लाह और रसूल के फर्क को भूल जाते हैं। इर्शादे बारी तआला हैः– ''अपने दीन में गुलू न करो।''(निसा–171, माईदा–77) आप सल्ल. की आमद और बअसत का मकसद तो यह था कि लोगो को कुफ्र और शिर्क के अन्धेरों से निकाल कर तौहीद की तरफ बुलाऐं। गैरुल्लाह की इबादत से हटाकर अल्लाह अकेले की पूजा(बन्दगी) पर लगाएं। आप सल्ल. ने फरमाया भी था ''मेरी तारीफ में इस तरह हद से आगे न बढ़ना जैसे नसारा (ईसाई) ईसा अलैहि. की तारीफ में हद से आगे निकल गये। मैं तो अल्लाह का बन्दा हुँ। मुझे अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल कहो।'' (बुखारी–3445) रबीआ बिन्ते मऊज़ रज़ि. का बयान है कि मेरी शादी की सुबह नबी सल्ल. हमारे घर तशरीफ लाए। दो छोटी बच्चियाँ जंगे बदर में शहीद होने वाले मेरे रिश्तेदारों के बारे में अशआर पढ़ रहीं थीं। बच्चियों ने कहा– हम में एक ऐसा नबी है जो कल होने वाली बात जानता है। (यह सुनकर) आप सल्ल. ने फरमाया ''ऐसे मत कहो। जो कुछ कल होगा उसे अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता।'' (बुखारी–4001 , इब्ने माजा–1897)

तौहीद तो यह है कि दुख–दर्द में दुआएं सुनने और कुबूल करने वाला सिर्फ अल्लाह ही को समझा जाए। अल्लाह ने फरमाया ''कह दो कि में तो अपने रब को पुकारता हुँ और किसी को उसका शरीक नहीं बनाता। यह भी कह दो कि मैं तुम्हारे हक़ में नुक्सान और नफे का कुछ इख्तियार नही रखता।'' (जिन्न–20–21) और '' ऐ लोगो! दीन को खालिस अल्लाह के लिये मानते हुऐ(सिर्फ) अल्लाह ही को पुकारो।'' (आराफ–29) लोगों! ''अपने रब से आजिजी से और चुपके चुपके दुआएं मांगा करो।''(आराफ–55) इसलिये कि ''मदद तो अल्लाह ही की तरफ से है।''(अनफाल–10) साथ ही यह भी फरमा दिया ''जिन को तुम अल्लाह के अलावा पुकारते हो वो तुम्हारी मदद की ताकत नहीं रखते बल्कि वो तो अपनी मदद भी नहीं कर सकते।'' (आराफ–197) और मुश्रीकीने मक्का का शिर्क इस तरह बयान फरमाया ''जब ये कश्ती में सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं और खालिस उसी की इबादत करते हैं। लेकिन जब वह (अल्लाह) उनको निजात दे देता है तो जमीन पर पहुँच कर शिर्क करने लगते हैं।'' (अन्कबूत–65) मगर अफसोस! आज कई लोग समन्दर में भी या रसूलुल्लाह मदद या अली मदद' और 'मदद या गौसे आज़म' के नारे लगाते हैं और इस तरह शिर्क में मुश्रिकीने मक्का से एक कदम आगे निकल जाते हैं क्योंकि मक्का के मुश्रिक तो खुशहाली में शिर्क करते थे और मुसीबतों या समंदर में सिर्फ अल्लाह ही को पुकारते थे। मगर आज के लोग खुशी हो या गम, ज़मीन हो या समन्दर अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को (मदद के लिए) पुकारा करते हैं।

अम्बिया अलैहि. और औलिया अल्लाह की दुआएं

अम्बिया अलैहि. हों या औलिया अल्लाह रह. उन्होंने जब भी दुआ की अल्लाह ही से की। आदम अलैहि. हों या नूह अलैहि. या कि इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याकूब, युसुफ, युनुस या अय्युब अलैहि. सभी अल्लाह ही को पुकारा करते थे। उसी से दुआ मांगा करते थे हत्ता कि आप सल्ल. ने भी अल्लाह ही से दुआएं मांगी। जैसे–''रब्बी ज़िदनी इल्मा'' यानि ऐ मेरे रब! मेरे इल्म को बढ़ा। (ताहा–114) इसी तरह असहाबे कहफ हों या आराफ वाले उन्होंने भी जरुरत के वक्त अल्लाह ही को पुकारा। इसलिए कि ''दुआ ही इबादत है।'' (इब्ने माजा–3828, तिर्मिज़ी–3126– नौमान रजि.) इस इकरार के बावजूद कि इबादत के लायक सिर्फ अल्लाह है और ''दुआ इबादत की रुह है।''(तिर्मिजी–3125) फिर भी कुछ लोग जाने क्यों अल्लाह के अलावा औरों(दूसरों) को भी पुकारते हैं और शिर्क में गिरफ्तार हो जाते हैं।

इर्शादे बारी तआला है "जब उनके पास हमारे फरिश्ते जान निकालने(लेने) को आएंगे तो कहेंगे–वो कहा है? जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारा करते थे। (ऐसे लोग) कहेंगें–आज हम से गुम हो गये और इकरार करेंगे कि बेशक वो काफिर थे।"(आराफ–37) और लोगों "अल्लाह के साथ किसी ओर माबूद को न पुकारो वरना तुम अज़ाब पाने वालों में हो जाआगे।" (शोअरा–213)

गैरुल्लाह को पुकारना शैतान की इबादत है–

शैतान को कोई रुकू व सज्दा नहीं करता। कोई शैतान को मदद के लिये पुकारता भी नही लेकिन चूंकि अल्लाह के सिवा किसी को भी मदद के लिए पुकारा जाए वह शैतान को ही पुकारना और उसकी इताअत और इबादत करना है। उन लोगो से जो गैरुल्लाह को पुकारते हैं अल्लाह कयामत के दिन फरमायेगा "ऐ औलादे आदम! क्या मैने तुमसे नही कह दिया था कि शैतान की इबादत मत करना? यकीनन वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। मेरी ही इबादत करना यही सीधी राह है।" (यासीन–60–61) मालूम हुआ कि बुत हों या कब्रें, फरिश्ते हों या जिन्न या कि सूरज, चाँद व सितारे किसी को भी पुकारा जाऐ शैतान की इबादत करना ही कहलायेगा हालाँकि "अल्लाह को पुकारना ही फायदेमंद है और जो (लोग) उसके सिवा दूसरों को पुकारते हैं वोह उन्हें कोई जवाब नही दे सकते। इसकी मिसाल पानी की तरफ हाथ फैलाने वाले की तरह है। (जो चाहता है कि) पानी उसके मुंह में आ जाए। जबकि वह आ नही सकता और काफिरों की पुकार बेकार है।" (रअद–आयत–14) इसी तरह "जिन को अल्लाह के अलावा तुम पुकारते हो वो खजूर की गुठली के छिलके के भी मालिक नहीं। अगर तुम उनको पुकारो तो वो तुम्हारी पुकार नहीं सुनेंगें और मान लो अगर सुन भी लें तो तुम्हारी दुआ कुबूल नही कर सकते और कयामत के दिन वह तुम्हारे शिर्क का इन्कार कर देंगे।" (फातिर–आयत–13–14) अल्लाह ने यह भी फरमाया "उस शख्स से बढ़कर गुमराह कौन हो सकता है? जो अल्लाह के सिवा उन्हें पुकारता है जो कयामत तक उसे जवाब दे नहीं सकते। वह तो उसके पुकारने ही से गाफिल हैं। कयामत के दिन वो पुकारने वाले के दुश्मन हो जायेंगे और उसकी इबादत का इन्कार कर देंगें।" (अहकाफ–आयत–65) अफसोस! इन कुरआनी आयात को जानने मानने और समझने के बावजूद कुछ लोग हैं कि इस तरह के अकाइद रखते हैं–

(1) औलिया से मदद माँगना, उन्हें पुकारना और उनको वसीला बनाना शरअन जाइज और पसन्दीदा है। (फतावा रिजविया–सफा–300)

(2) अम्बिया, औलिया, उलेमा और सालेहीन से उनके वफात पा जाने के बाद भी मदद मांगना जाइज है। औलिया बाद वफात भी दुनिया में तसर्रुफ करते हैं। (अल अमन व अल अला–सफा–10)

(3) मैंने जब भी मदद चाही या गौस ही कहा। एक बार मैंने एक दूसरे वली से मदद माँगनी चाही मगर मेरी जुबान से उनका नाम ही नही निकला बल्कि या 'गौस' ही निकला। (मलफूज़ात–अहमद रजा सा. सफा–307)

(4) जो शख्स किसी नबी, रसूल या वली से वाबस्ता होगा तो उसके पुकारने पर वह हाजिर होगा और उसकी मदद करेगा। (फतावा अफ्रीकीया–सफा–135)

(5) जब तुम्हें परेशानी का सामना हो तो कब्र वालो से मदद मांगो। (अल अमन व अल अला–सफा–46)

(6) हर चीज़, हर नैमत, हर मुराद, हर दौलत दीन में, दनिया में या आखिरत में पहले दिन से आजतक और आज से कयामत तक जिसे मिलती है या मिलेगी वोह नबी सल्ल. के मुबारक हाथों से मिली और मिलती है। (फतावा रिजविया–सफा–577)

ऊपर(पीछे) जिक्र की गई आयात की रोशनी में इस तरह के नजरियात व अकाइद रखना क्या शिर्क नहीं? वह दीन जो सहाबा किराम रज़ि. ने नबी सल्ल. से सीखा उसमें कहीं यह अकाइद नहीं मिलते न ही ताबईन रह. से इस तरह के नज़रियात व अकाइद साबित हैं। कोई शख्स आप सल्ल. से मुहब्बत का लाख दावा करे मगर आप के अहकाम की

परवाह न करे बल्कि अपने दिल से दीन में नई नई बातें शामिल कर ले तो ऐसा शख्स रसूल सल्ल. का ना फरमान नही तो फिर क्या है? इर्शादे बारी तआला है– ''जो चीज़ तुम को रसूल दे उसे ले लो और जिससे मना करे उससे रुक जाओ।'' (हश्र–आयत–7) और ''जिसने रसूल की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की।'' (निसा–आयत–80) अल्लाह के रसूल सल्ल. तो यह फरमाएं कि मैं अपनी जान के लिये और तुम्हारे लिये किसी नफे या नुकसान का इख्तियार नही रखता। मगर आशिकाने रसूल सल्ल. बने लोग यह कहें कि आप सारी कायनात के 'मुख्तारे कुल' हैं।आप के दर से दुनिया को रिज्क, औलाद व माल और दौलत सब तकसीम होते हैं। ऐसे लोग अकीदा ए तौहीद के बारे में कितने बे परवाह हैं? यह बात उनके इन नज़रियात से भी मालूम की जा सकती है–

(1) मुहम्मद सल्ल. खुदा है–

मौलवी मुहम्मद यार गढ़ी साहब दीवाने मुहम्मदी में लिखते हैं–

''गर मुहम्मद ने मुहम्मद(सल्ल.) को खुदा मान लिया
फिर तो समझो मुसलमां है, दगाबाज़ नहीं।'' (दीवाने मुहम्मदी)

एक और साहब ने कहा ''वही जो मुस्तवी ए अर्श था खुदा होकर
उतर पड़ा है मदीना मैं मुस्तफा होकर।''

इस अकीदे की दलील इब्ने अरबी का यह कलाम है ''मुहम्मद अजीमुश्शान(सल्ल.) को मुहम्मद गुमान करते हो। जैसे कि तुम सराब को दूर से देखकर पानी समझते हो और वो ज़ाहिरी नजर में पानी ही है मगर हकीकत में पानी नही है बल्कि सराब(मरीचिका) है। इसी तरह जब तुम मुहम्मद सल्ल. के करीब आओगे तब तुम नबी सल्ल. को नही पाओगे बल्कि मुहम्मद(सल्ल.) में अल्लाह को पाओगे। (फतूहाते मक्किया–ज़िल्द–2 सफा–127)
क्या यह अकीदा इस्लामी अकीदा है? या कुरआन में या किसी सही हदीसे रसूल सल्ल. में है?

(2) मुहम्मद (सल्ल.)्र अव्वल मखलूक है–

सय्यद अहमद सईद काज़मी ने अल्लामा जलाल दवानी के हवाले से लिखा
1. नबी सल्ल. अव्वल मखलूक हैं।
2. नबी सल्ल. अक्ले अव्वल और क़लम ए आला हैं।
3. नबी सल्ल. नूरानी जौहर हैं।
4. नबी सल्ल. सारी कायनात के हक़ाइके लतीफा के जामेअ हैं।
5. नबी सल्ल. अल्लाह को जानते हैं। तमाम मौजूदात व मखलूकात और उनके सारे हालात को बखूबी जानते हैं। माज़ी, हाल व मुस्तकबिल (भूत, वर्तमान व भविष्य) में कोई चीज़ किसी हाल में नबी सल्ल. से छिपी हुई नहीं।
6. तमाम खारजी मौजूदात हकीकते मुहम्मदी से जाहिर हुई हैं हत्ता कि उनके ज़हूर की तरतीब भी वही है जो हकीकते मुहम्मदिया में मसतूर है। (तस्कीन अल ख्वातिर–सफा–50)
यह नज़रियात आपको कुरआन की किसी आयत या किसी हदीसे रसूल सल्ल. में इन्शाल्लाह नहीं मिलेंगें। बल्कि यह सूफिया के खाना साज़ धर्म की ईजाद है।

(3) हकीकते मुहम्मदिया– न औलादे आदम है न बशर है–

एक शख्स है मुहम्मदी और दूसरी है हकीकते मुहम्मदी। यह शख्स मुहम्मदी उस जिस्में अतहर का नाम है जो औलादे आदम अलैहि. में से है और हकीकते मुहम्मदी सूफिया की इस्तेलाह में अल्लाह तआला की पहली तखलीक का नाम है। आप सल्ल. अल्लाह की पहली तजल्ली हैं और बाकी जितनी मखलूक हैं वो अल्लाह की दूसरी तजल्लियात की मज़हर हैं। तमाम रुहें रुहे मुहम्मदी से पैदा हुई हैं। लिहाजा आप सल्ल. तमाम रुहों के बाप हैं। (साला नौराज़– मुफ्ती अहमद यार खान) क्या यह अकीदा आपको कुरआन या सही हदीस में मिला? मिलेगा भी नहीं। इंशा अल्लाह

(4) तमाम कायनात आप सल्ल.के फैज की मुहताज है–

आप सल्ल. मबदा ए कायनात, फरव्रे कायनात बल्कि मकसूदे कायनात है। आप सल्ल. असल (जड़) हैं ओर बाकी कायनात आप की फरअ (शाखें) है। ''इस कायनात का जर्रा–जर्रा चाहे

वह ऊपर है या जमीन के नीचे, हवाओं में है या फिजाओं में, नीचे है या ऊपर है, अर्श में है या फर्श में जहां भी कोई जिन्दा है वह आप सल्ल. की जड़ के लिए शाख़ है। आप सल्ल. का फ़ैज इस तरह कायनात के जर्रे–जर्रे को पहुंच रहा है जैसे जड़ का फ़ैज शाख के हर हिस्से को पहुंचता हैं। अगर आप सल्ल. न हो तो कायनात जिन्दा नहीं रह सकती। अगर वह (सल्ल.) मर गये तो हम कैसे जिन्दा रह गये।'' (जिक्रे हबीब– सफ़ा –13–14) जबकि अल्लाह ने आप सल्ल. की जुबानी कहलवाया '' मैं अपनी जात के लिए किसी नफें या नुक्सान का इख्तियार नहीं रखता मगर जितना अल्लाह चाहे।'' (युनुस–आयत–49) और '' मुझे तुम्हारे लिए भी किसी नुक्सान और नफें का इख्तियार नहीं।'' (जिन्न–आयत–21) ''मुझे हरगिज कोई अल्लाह से बचा नहीं सकता ओर मै उसके सिवा कोई जाए पनाह नहीं पाता।'' (जिन्न–आयत–22)

(5) आप सल्ल. हाजिर–नाजिर है–

(अ) अल्लाह तआला ने अपनी सब मखलूकात में जो चीज सब से पहले पैदा की वह आप सल्ल. का नूरे मुबारक है। फिर उस नूर के एक हिस्से से अर्श से फर्श तक सारी मखलूकात को पैदा किया। चूकि सब मखलूक उन्हीं के नूर से है लिहाजा उनका होना मखलूक का होना है और उनका मौजूद होना कायनात के वजूद के लिए जरूरी है।
(ब) जब आप सल्ल. दुनिया मे तशरीफ लाए तो सारी कायनात वजूदे मुहम्मदी से जिन्दा हो गई। चूंकि तमाम मखलूकात की रूह आप सल्ल. की हस्ती है इसलिए आप हर जगह मौजूद है। (तस्कीन अल ख्वातिर–सफा –43) क्या आपने यह बात कुरआन या किसी सही हदीस में पढी?

(6) आप सल्ल. जिन्दा हैं–

हर नैमत चाहे कम हो या ज्यादा, छोटी हो या बड़ी, जिस्मानी हो या रूहानी, दीनी हो या दुनियावी, खुली हो या छिपी पहले दिन से कयामत तक मोमिन या काफिर, इंसान, जिन्न या हैवान (जानवर) बल्कि सिवा अल्लाह के जिसे जो कुछ मिली या मिलती है या मिलेगी। नबी सल्ल. के हाथों बटंती है और बटेगी। (बहारे शरीयत) ''आप सल्ल. अपनी क़ब्र में जिन्दा है। आप की जिन्दगी दुनियावी है, बरजखी नही है। '' (अकाइद उलैमा ए देवबन्द–सफा –22) कारी मुहम्मद तैय्यब साहब ने लिखा आप सल्ल की हयात (जिन्दगी) बरजखी है मगर इतनी ताकतवर है कि आसार के लिहाज से दुनियावी भी है। यही वजह है कि वफात के बाद आप सल्ल. के होटों को हरकत हुई, जनाजे और क़ब्र में कलाम (बात) किया। इसीलिए मीरास जारी नहीं हुई। आप सल्ल. की बीवियां बेवा नहीं हुई। आप सल्ल. क़ब्र में इबादत करते हैं। सवाल – अगर आप सल्ल. अपनी क़ब्रे मुबार का में जिन्दा है और उनकी पाक बीवियां बेवा नहीं हुई तो फिर
(1) सहाबा किराम रजि. क्यों कहा करते थें '' उस दिन से रोशन और बेहतर कोई दिन ने था जिस दिन आप सल्ल. मदीना आए थे और कोई दिन उस से ज्यादा बुरा और बेनूर न था जिस दिन आप सल्ल. ने वफात पाई।'' (इब्ने माजा–1631–अनसरजि.)
(2) अगर आप सल्ल. की रूह बदन से नहीं निकली तो फिर जब आप सल्ल. ने फातिमा रजि. को बताया कि आप अपनी इसी बीमारी में वफात पा जायेगें तो फातिमा रजि. रोने क्यों लगी थीं।'' (बुखारी–44,33 और मुस्लिम 2450) और क्यों फ़ातिमा रजि. ने अनस रजि. से कहा कि '' तुम ने किस दिल से अल्लाह के नबी सल्ल. के जिस्म पर मिट्टी डाली।'' (मुस्लिम– 4462)
(3) अगर आप सल्ल. की वफात नहीं हुई तो अबुबकर रजि. के इस मशहूर खुत्बे का क्या मतलब है? '' तुम में से जो शख्स मुहम्म्द सल्ल. की इबादत करता था तो वह जान ले कि मुहम्मद सल्ल. वफात पा चुके और तुम में से जो शख्स अल्लाह की इबादत (पूजा) करता था। तो यकीनन अल्लाह हमेशा जिन्दा रहने वाला है।
(स) ऐंसा अकीदा रखने वाले लोग इस आयत पर भी गौर क्यों नहीं करते –
फिर आप रजि. ने सूरह अम्ले इमरान की आयत 144 की तिलावत की '' मुहम्मद (सल्ल.) सिर्फ रसूल ही है। उन से पहले बहुत से रसूल हो चुके है। क्या अगर इन का इन्तेकाल हो

जाए या यह शहीद कर दिये जाएं तो क्या तुम इस्लाम से अपनी एडियों के बल पलट जाओगे? और जो कोई ऐसा करेगा, वह अल्लाह का कुछ न बिगाडेगा।'' इस आयत को सुन कर उमर रजि. ने फरमाया '' मैं जान गया कि नबी सल्ल. का इन्तेकाल हो चुका।'' (बुखारी–4454–1241) इर्शादे बारी तआला है कि हर नफ्स को मौत का मजा चखना है।'' (अम्बिया–35 और अन्कबूत–57) ''आप भी मरने वाले हैं और इन्हें भी मौत आने वाली है। (जुमर–आयत–30) इन दो आयात का क्या मतलब है? उन लोगों की नजर में जो नबी सल्ल. को जिन्दा माने बैठे हैं।

(7) नबी सल्ल. आलिमुल गैब हैं –

कुरआन (लुकमान–आयत–34) में है कि 5 चीजों का इल्म सिवा अल्लाह के कोई नहीं जानता। लेकिन आप सल्ल. की तो बात ही क्या आपकी उम्मत के 7 अकताब भी इन 5 चीजों का इल्म रखते है जबकि अक्ताब का दर्जा गौस से भी कम (नीचा) है। (जा अल हक –सफा –106) '' कह दो जो भी आसमानों और जमीन में है। गैब की बाते नहीं जानते सिवाए अल्लाह के। उन्हें यह भी पता नहीं कि कब (जिन्दा करके) उठाये जायेगे।'' (नम्ल आयत – 65) अल्लाह ने जब आप सल्ल. को खबर दी तो आप सल्ल. ने कयामत की निशानियां दज्जाल की आमद और ईसा अलैहि का नुजूल समेत बहुत से वाकिआत अपनी उम्मत को बताये और जब खबर न दी तो–

(1) '' आप सल्ल. ने एक मुनाफिक के साथ 70 सहाबा तब्लीगें दीन के लिए भेज दिये। जिन्हें उसने धोखा देकर शहीद करवा दिया।'' (बुखारी–4090 और मुस्लिम – 677)

(2) आप सल्ल. ने एक यहूदी के घर जहर मिला खाना खाया। जिससे एक सहाबी मौके पर ही फोत हो गये और वफात के वक्त आप सल्ल. पर भी जहर ने अपना असर दिखाया।'' (अबुदाऊद 4511 और मुस्लिम–2190)

(3) मुनाफिकीन ने आऐशा रजि. पर तोहमत लगाई। आप सल्ल. एक माह तक बहुत परेशान रहे। एक माह बाद जब अल्लाह ने वहय के जरिये आयेशा रजि. की बेगुनाही साबित की तो आप सल्ल. की परेशानी दूर हुई। (बुखारी–4750) मालूम हुआ आप सल्ल. को इल्मे गैब नहीं था। यही बात अल्लाह ने अपने नबी से कहलवाई '' अगर में गैब की बातें जानता तो बहुत से फायदे जमा कर लेता और मुझे कोई तक्लीफ न पहुंचती। (आराफ–आयत–188)

मुहतरम हजरात।

अल्लाह ने अपने रसूल को आसान दीन देकर भेजा। अगर हमें निजात चाहिये तो अल्लाह की बात (हुक्म) मानें और उसके रसूल (सल्ल.) की इताअत करें। उनके बतलाए तरीकें पर जिन्दगी गुजारें। इन दोनों की नाफरमानी करते हुए किसी और की बात मान कर और उसके तरीके को अपना कर अपने आमाल जाया व बर्बाद न करें। अल्लाह हम सभी को दीने हक की सही समझ अता करे। हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए और हर तरह के शिर्क व बिदआत से बचाए। आमीन या रब्बल आलामीन।

माखूज़

हुब्बे रसूल सल्ल. की

आड़ में मुश्रिकाना अकाइद

अज–सय्यद शफीकुर्रहमान साहब

आपका दीनी भाई

मुहम्मद सईद

Email : saeed.tonk@gmail.com

मो.09887239649, 09214836639